इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय दो

विषय-वस्तु और संरचना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. आवर्ती विषय-वस्तु.....1

क. यीशु में अन्तिम दिन 2

ख. पुराने नियम का समर्थन 3

1. तथ्यात्मक पृष्टभूमियाँ 4
2. धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण 4
3. नैतिक दायित्व 5
4. युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियाँ 6
5. राजवंशीय आदर्श 6

ग. दृढ़ विश्वास के लिए उपदेश 7

1. प्रतिक्रियाएँ 7
2. प्रेरणाएँ 8

III. आलंकारिक संरचना 11

क. स्वर्गदूतीय प्रकाशन 11

ख. मूसा का अधिकार 12

ग. मलिकिसिदक का महायाजकीयपन 13

घ. नई वाचा 15

ङ. व्यावहारिक दृढ़ता 18

IV. सारांश.....20

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय दो

विषय-वस्तु और संरचना

परिचय

हम अक्सर स्वयं को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ पर हम लोगों को हमारे साथ सहमत होने के लिए सम्मत करना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए बहुत से तरीके हैं, परन्तु कइयों में से एक सबसे प्रभावशाली तरीका जितना ज्यादा सम्भव हो उन मान्यताओं के ऊपर निर्मित करना होता है, जिनमें हम पहले से सामान्य रूप से विश्वास करते हैं। फिर सामान्य आधार पर निर्भर होते हुए, हम दूसरों को अन्य विषयों के लिए निरूत्तर करने की कोशिश कर सकते हैं। कुछ इसी तरह से, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने किया। उसने एक ऐसी कलीसिया को लिखा जो सताव से बचने के लिए सुरक्षा पाने की कोशिश में उन शिक्षाओं की ओर मुड़ने के लिए तैयार थी जो उनके स्थानीय यहूदी समुदाय में प्रचलित थी। परिणामस्वरूप, मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उन्हें सम्मत करने के लिए, उसने जितना ज्यादा सम्भव हो सके उन मान्यताओं के ऊपर एक ऐसी रचना का निर्माण किया जिस पर वह और उसके श्रोतागण सामान्य रूप से बने रहें।

हमारी *इब्रानियों की पुस्तक* के ऊपर इस श्रृंखला का यह दूसरा अध्याय है और हमने इसका शीर्षक "विषय-वस्तु और संरचना" के नाम से दिया है। इस अध्याय में, हम यह देखेंगे कि कैसे इब्रानियों के लेखक ने उसकी सम्मत कराने वाली रणनीति का अनुसरण किया जब उसने उसके श्रोताओं को उपदेश दिया कि वे मसीह के प्रति उनके समर्पण को पुन:स्थापित करें।

इब्रानियों की विषय-वस्तु और संरचना के ऊपर हमारा यह अध्याय दो भागों में विभाजित होगा। प्रथम, हम उन आवर्ती विषय-वस्तु को देखेंगे जो कि पुस्तक के प्रत्येक मुख्य खण्ड में प्रगट होते हैं। दूसरा, हम इब्रानियों के आलंकारिक व्यक्तव्यीय संरचना की खोज करेंगे, कि कैसे लेखक ने इन आवर्ती तत्वों को सम्मत कराने वाले प्रस्तुतीकरण में बुना है। आइए सबसे पहले इब्रानियों की आवर्ती विषय-वस्तु को देखते हुए आरम्भ करें।

आवर्ती विषय-वस्तु

हमारे पूर्ववर्ती अध्याय में, हमने इब्रानियों की पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को इस तरीके से सारांशित किया था:

> **इब्रानियों के लेखक ने उसके पाठकों को यह उपदेश देने के लिए लिखा कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।**

हमारे अध्याय में इस समय, हम यह देखना चाहते हैं कि कैसे लेखक ने उसके उद्देश्य को एक जैसे तत्वों का बारी बारी उपयोग करते हुए प्राप्त किया है।

इब्रानियों की आवर्ती विषय-वस्तु को निकटता से देखने से यह प्रगट होता है कि लेखक ने उसके व्यापक उद्देश्य को तीन मुख्य तत्वों की पुनरावृत्ति करते हुए पूरा किया है। प्रथम, उसने इस तथ्य की ओर ध्यान देने की बुलाहट दी है कि इतिहास यीशु में अन्तिम दिनों तक पहुँच गया है। दूसरा, उसने अपनी इस मान्यता के लिए पुराने नियम के समर्थन को प्रस्तुत किया है। और तीसरा, उसने उसके श्रोताओं को उनके मसीही विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए कई उपदेश प्रस्तुत किए हैं। आइए लेखक की उस मान्यता से आरम्भ करें कि अन्तिम दिन यीशु में आ पहुँचे थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यीशु में अन्तिम दिन

अधिकांश स्थानों में, जब मसीह के अनुयायियों ने "अन्तिम दिनों" की अभिव्यक्ति को सुना तो उनका मन परोक्ष में ही मसीह के पुन: महिमा सहित वापस आने के चारों ओर की घटनाओं के ऊपर चला जाता था। हम में से बहुत से अपने बहुत से समय और प्रयासों को महाक्लेश, हवा में उठा लिये जाने, और सहस्त्र वर्ष जैसी घटनाओं को समझने में खर्च कर देते हैं। परन्तु जब हम इब्रानियों की पुस्तक के "अन्तिम दिनों" के बारे में बोलते हैं, तो हमारे मन में कुछ और ही आता है जो कि उन घटनाओं से बहुत अधिक बढ़ कर हैं जो मसीह के दूसरे आगमन के साथ सम्बद्ध है।

मसीही धर्मशास्त्री अक्सर बाइबल की अन्तिम दिनों के लिए दी गई शिक्षाओं को "युगान्तविज्ञान" के रूप में उल्लेख करते हैं। यह तकनीकी शब्द यूनानी शब्द *इस्काटोस* (ἔσχατος) से आता है जिसका अर्थ "पिछला" या "अन्तिम" से है। रूचिपूर्ण बात यह है कि, नए नियम की यह शब्दावली पुराने नियम में बहुत पहले ही व्यवस्थाविवरण 4:30 में ही "अन्तिम दिनों" के रूप में उल्लिखित है। वहाँ पर, मूसा ने इस्राएलियों को चेतावनी दी है कि यदि वे परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करते हैं तो वे बन्धुवाई में चले जाएंगे। परन्तु उसने उन्हें यह भी निश्चय दिलाया कि "अन्तिम दिनों में," यदि वे पश्चाताप करेंगे, तो वे परमेश्वर की अतुलनीय आशीषों के साथ बन्धुवाई में से वापस लौटेंगे। और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने उन घटनाओं के लिए बोला जो कि इस्राएल के बन्धुवाई में से वापस लौटने के लिए "अन्तिम दिनों में" घटित होने से सम्बन्धित हैं।

इब्रानियों 1:1-2 में यह देखना कठिन नहीं है कि इब्रानियों के लेखक के ध्यान में जब वह अपनी इस पुस्तक को लिख रहा था, तो युगान्तविज्ञान था। उस पहिली बात को सुनिए जिसे उसने लिखा है:

> **पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि की रचना की है (इब्रानियों 1:1-2)।**

ध्यान दें कि कैसे ये आरम्भिक आयतें उस ओर संकेत देती हैं जो परमेश्वर ने मसीह में "इन अन्त के – या युगान्तविज्ञानीय - "दिनों में" किया है। इब्रानियों के लेखक के कहने का क्या अर्थ है? क्यों उसके लिए युगान्तविज्ञान इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है?

> **मुख्य द्वार के ठीक बाहर ही, अर्थात् इब्रानियों की पुस्तक की पहिली आयत में ही, वे चाहते हैं कि वे यह जाने कि यीशु ही भविष्यवाणियों के सारे शब्दों की पूर्णता है, जो उससे पहली आई हैं। वह कहता है कि, "पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा" – "या अपने पुत्र के माध्यम से बातें की," और इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु ही उन सब बातों की पूर्णता है जो उसके पहले आई। वह आने वाला प्रभु है, वह आने वाले प्रभु का दिन है, वह राज्य का प्रवेशद्वार है, और मानवीय इतिहास में अन्तिम शब्द जिसे परमेश्वर कहना चाहता है; जो कि यीशु में पाया जाता है।**
>
> **- डा. के. ऐरिक थियोनॉस**

इब्रानियों के युगान्तविज्ञान को समझने कि लिए, हमें हमारे विचारों को इस्राएल के इतिहास में पुराने नियम के अन्त की निकटता में घटित होने वाली कुछ ऊपर और नीचे की बातों और पुराने और नए नियम के मध्य

के समय के अन्तराल के द्वारा भरना होगा। राजशाही अवधि के मध्य, इस्राएल परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करने में गहरा और बड़ी गहराई से गिरता चला गया। अन्तत: परमेश्वर ने अश्शूरियों की सेना को उत्तरी इस्राएलियों के बहुमत को बन्धुवाई में ले जाने के लिए भेज दिया। बाद में, परमेश्वर ने बाबुल की सेनाओं को ऐसे ही यहूदा के साथ करने के लिए भेज दिया। अब, लगभग 538 ईस्वी सन् में, इस्राएल और यहूदा के कुछ बचे हुए प्रतिज्ञात् भूमि पर इस आशा से आए कि परमेश्वर अन्तिम दिनों में अपनी आशीषों और न्याय को उण्डेलेगा। परन्तु बड़े-पैमाने पर पश्चाताप कभी भी नहीं हुआ। और इसके परिणामस्वरूप, इस्राएल आने वाली पाँच शताब्दियों तक मादी और फारसी, यूनानी और अन्त में रोमी साम्राज्य के अंतर्गत उनके अत्याचारों से दुखों को उठाते रहने के लिए निर्धारित कर दिया गया।

पुराने और नए नियमों के मध्य में, अधिकांश यहूदी समुदायों ने इस आशा को स्थिरता से थामे रहा कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय और आशीषें अन्तिम दिनों में आ जाएंगी। यह आशा उनके लिए इतनी ज्यादा महत्वपूर्ण थी कि उन्होंने सम्पूर्ण इतिहास को ही दो बड़े युगों में विभाजित कर दिया। उन्होंने ऐसे समय के बारे में बोला जिसमें वे "इस युग" के रूप में रह रहे थे जो कि पाप का युग था जिसके परिणामस्वरूप इस्राएल असफल हुआ और बन्धुवाई में गया। और उन्होंने "आने वाले युग" के बारे में भी बोला, जो वह समय होगा जब परमेश्वर अपने अन्तिम न्याय को उसके शत्रुओं और उसकी अन्तिम, महिमामयी आशीषों को उसके विश्वासयोग्य लोगों के ऊपर उण्डेल देगा। और वह पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के ऊपर आधारित हो, वे जानते थे कि परमेश्वर दाऊद के महान् पुत्र, मसीह को इस युग से आने वाले युग में परिवर्तिन लाने के लिए भेजेगा।

युगान्तविज्ञान के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा, इब्रानियों के लेखक ने उसकी मान्यता को एक ऐसे सामान्य आधार के ऊपर निर्मित किया जो कि दोनों अर्थात् उसके श्रोताओं में और व्यापक यहूदी समुदाय में प्रचलित थी। परन्तु साथ ही, उसने बारी बारी से उस ओर संकेत दिया जहाँ पर वे जो यीशु में विश्वास करते हैं और वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उनके अलग अलग मार्ग थे। अविश्वासी यहूदियों ने यह माना कि मसीह एक भंयकर, नाटकीय परिवर्तन इस युग और आने वाले युग में लेकर आएगा। परन्तु मसीह के अनुयायियों ने यह शिक्षा पाई थी कि यीशु अन्तिम दिनों को तीन चरणों में लेकर आएगा: उसके प्रथम आगमन में वह मसीहवाचीय राज्य का उदघाटन करेगा, उसका मसीहवाचीय राज्य पूरे कलीसियाई इतिहासकाल में चलेगा, और उसका मसीहवाचीय राज्य की पराकाष्ठा अर्थात् शिरो-बिन्दु तब होगा जब वह अपनी महिमा सहित पुन: वापस आएगा। नए नियम के लेखकों ने इन तीनों अवस्थाओं को प्रेरितों के काम 2:17 और 2 पतरस 3:3 जैसे संदर्भों में वर्णित किया है।

हम इस विषय की महत्वपूर्णता के भाव को तब प्राप्त करते हैं, जब हम यह ध्यान देते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने इस जैसी ही भाषा को कम से कम छ: घटनाओं में "अन्तिम दिनों" के लिए उपयोग किया है। इब्रानियों 2:5 में, उसने "आने वाले जगत" के बारे में लिखा है कि जब मसीह अपनी महिमा सहित पुन: वापस आएगा। अध्याय 6:5 में, उसने "आने वाले युग की सामर्थ्य" की ओर संकेत दिया है जिसे उसके बहुत से श्रोताओं ने अनुभव किया था। अध्याय 9:11 में, उसने मसीह को "आने वाली अच्छी वस्तुओं" जो कि पहले से ही यहाँ पर हैं, के महायाजक के रूप में लिखा है। अध्याय 9:26 में, उसने यीशु की पार्थिव सेवकाई की ओर "जगत के अन्त" के रूप में संकेत करता है। अध्याय 10:1 में उसने उन आशीषों के बारे में बोला है जो कि "आने वाली अच्छी वस्तुओं" के रूप में मसीह के बलिदान के परिणामस्वरूप आई। और अध्याय 13:14 में, उसने मसीह के अनुयायियों की अन्तिम आशा को "आने वाले नगर" के रूप में वर्णित किया है। इन जाने-पहचाने तरीकों की आवृति उन अन्तिम दिनों की झलक देती है जो हमें ये संकेत देते हैं कि यह विषय लेखक के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण था।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे इब्रानियों के आवर्त्ती विषय-वस्तु यीशु में अन्तिम दिनों के प्रति ध्यानाकर्षण को सम्मिलित करते हैं, हमें अब इस पुस्तक में एक दूसरे पुनरावृति करते हुए तत्व की ओर मुड़ना चाहिए: जो कि लेखक का अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के लिए पुराने नियम के समर्थन से है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पुराने नियम का समर्थन

अधिकांश लोगों के विचारों के अनुसार, इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम को लगभग 100 बार इससे उद्धरण देती, इसकी ओर संदर्भित करती, या इस ओर संकेत करती है। पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के साथ यह वार्तालाप लेखक के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इतना ज्यादा महत्वपूर्ण है कि यह उसकी पुस्तक के प्रत्येक मुख्य भाग में प्रगट होता है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, यह समझना कठिन नहीं है कि ऐसा क्यों है। स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं को चुनौती देने के लिए, इब्रानियों के लेखक ने इस एक सामान्य दस्तावेज से आग्रह किया है जिसे दोनों समुदाय पवित्र मानते हैं: अर्थात् पुराना नियम।

तथ्यात्मक पृष्टभूमियाँ

इस अध्याय के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन पाँच मुख्य तरीकों को देखना सहायतापूर्ण है जिसमें इब्रानियों के लेखक ने बार बार पुराने नियम की टिप्पणियों की पुनरावृति करते हुए उपयोग किया है। सबसे पहले, उसने पुराने नियम से तथ्यात्मक पृष्टभूमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

साधारण शब्दों में कहना, लेखक ने इब्रानी साहित्य से कुछ ऐतिहासिक विवरणों को स्मरण और कुछ शब्दों उदधृत किया है। उसने फिर मसीही विश्वास के अपने प्रस्तुतीकरण में इन तथ्यों को जोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 7:2 में उसने "मलिकिसिदक, शालेम का राजा" के नाम की व्याख्या, उत्पत्ति 14:18 से अर्थात् "धार्मिकता के राजा" और "शान्ति के राजा" से की है। इस तथ्यात्मक पृष्टभूमि ने तब यीशु और मलिकिसिदक की उसकी तुलना को उन्नत कर दिया।

एक अन्य उदाहरण, इब्रानियों 12:20 और 21 में, लेखक ने ध्यान दिया है कि इस्राएली सीनै पहाड़ पर डर गए थे जैसा कि निर्गमन 19:12 और 13 और व्यवस्थाविवरण 9:19 में उल्लेख किया गया है। उसने फिर इस्राएल के इस डर की तुलना मसीह के अनुयायियों की स्वर्गीय यरूशलेम के लिए आनन्द से की है।

धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण

दूसरे स्थान पर, लेखक ने उन बने रहने वाले धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के ऊपर ध्यान दिया है जो कि पुराने नियम में स्थापित हैं जो उनके दिनों में आज भी सत्य थे।

इन घटनाओं में, सरल ऐतिहासिक तथ्यों के ऊपर ध्यान देने की अपेक्षा, लेखक ने धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है जो कि इब्रानी पवित्रशास्त्र में पुष्टि की गई है – स्वयं परमेश्वर के बारे में और परमेश्वर के साथ निकटता से सम्बन्धित होते अन्य विषयों के ऊपर मान्यता।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1: 5 में, लेखक ने 2 शमूएल 7:14 - या इसके सामान्तर 1 इतिहास 17:13 का उद्धरण दिया है। यहाँ पर, परमेश्वर ने यह घोषणा की कि दाऊद के राजवंश से आने वाले प्रत्येक राजा को दाऊद के समय से परमेश्वर के "पुत्र" के रूप में पुकारा जाएगा।

इब्रानियों 1:7, 14 में, लेखक ने भजन संहिता 104:4 का उद्धरण दिया है जहाँ पर स्वर्गदूतों को सेवा करने वाली आत्माओं के रूप में वर्णित किया गया है।

इब्रानियों 2:6-8 में, उसने भजन संहिता 8:4-6 को उदधृत किया है। वह तर्क देता है कि परमेश्वर ने मानव प्राणियों को स्वर्गदूतों से उस समय तक के लिए कम ठहराया है, जब मानवजाति, न कि स्वर्गदूत, मसीह के साथ पूरी सृष्टि के ऊपर राज्य करेंगे।

इब्रानियों 2:13 का संकेत यशायाह 8:17, 18 की ओर है। ये आयतें प्रदर्शित करती हैं कि परमेश्वर की धार्मिकता की आशीषें अब्राहम के मानवीय परिवार के सदस्यों, न कि स्वर्गदूतों के मध्य में साझा की जाएगी।

इब्रानियों 6:13, 14 में, लेखक ने परमेश्वर की अब्राहम के साथ खाई हुई शपथ को उत्पत्ति 22:17 से उदधृत किया है। यहाँ पर परमेश्वर ने यह स्थापित किया कि उसकी प्रतिज्ञा अब्राहम से साथ स्थाई थी, जो कि नए नियम के समयों तक विस्तारित हुई।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इब्रानियों 12:29 में, लेखक ने व्यवस्थाविवरण 4:24 का उद्धरण, परमेश्वर एक भस्म करने वाली आग के रूप में वर्णित करते हुए दिया है। उसने ऐसा अपनी शिक्षाओं को सामर्थी बनाने के लिए किया कि परमेश्वर अभी भी मसीह में भस्म करने वाली आग है।

ऐसा ही उदाहरण इब्रानियों 4:4-7, 8:5, 9:20, 10:30-31, 10:38 और 13:5 में प्रगट होते हैं। इन सभी संदर्भों में, इब्रानियों का लेखक यह जोर देता है कि पुराने नियम में स्थापित निश्चित धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण नए नियम के समयों में भी सत्य बने हुए निरन्तर चल रहे हैं।

इब्रानियों के लेखक ने जो कुछ लिखा है उस पर उसने यह कहते हुए जोर दिया है कि यीशु पुराने नियम से सर्वश्रेष्ठ है, परन्तु फिर भी किसी भी समय इब्रानियों का लेखक पुराने नियम को निम्न स्तर का नहीं प्रगट करता या ऐसा जोर नहीं डालता कि इसे अन्देखा किया जा सकता है या फिर इसे आसानी से छोड़ा जा सकता है; हमें अब इसके और ज्यादा पठन् की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि हमारे पास यीशु है। इसका कहीं भी अंशमात्र भी संकेत नहीं मिलता है। प्रत्येक स्थान पर इब्रानियों का लेखक पुराने नियम का निर्दोष सम्मान के साथ व्यवहार करता है; वह समझता है कि यह परमेश्वर का वचन है। और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण, यह पुराना नियम ही है जो कि उन सभी श्रेणियों को स्थापित करता है जो ये अर्थ देती हैं कि यीशु कौन है। एक महायाजक क्या होता है? यह पुराने नियम में स्थापित है। वह एक निश्चित बलिदान का प्रस्ताव देता है। लहू का क्या अर्थ है? मिलाप वाले तम्बू में महापवित्र स्थान का क्या अर्थ होता है? हाँ, अब इब्रानियों में यह स्वर्गीय मिलाप वाला तम्बू है, परन्तु यह पहले से ही एक श्रेणी के रूप में पार्थिव मिलाप वाले तम्बू और फिर बाद में सुलेमान के मन्दिर के रूप में स्थापित है। इसलिए बहुत सी ये श्रेणियाँ, यहाँ तक व्यक्तिगत् स्तर पर, पुराने नियम में विश्वास की प्रामाणिक छाप के रूप में स्थापित हैं, उदाहरण के लिए, इब्रानियों 11, या वे बुरे उदाहरण जो कि रेगिस्तान में इब्रानियों 3 के अन्त में गिर कर मर गए. ये सभी पुराने नियम में से लिए गए हैं।

- डा. डी. ऐ. कॉरसन

नैतिक दायित्व

तीसरे स्थान पर, इब्रानियों के लेखक ने बने रहने वाले नैतिक दायित्वों पर भी ध्यान दिया है। इन घटनाओं में, लेखक ने उस ओर संकेत दिया है कि परमेश्वर ने कुछ निश्चित शर्तों को पुराने नियम के समय में उसके लोगों के ऊपर रखी थी। और ये दायित्व नए नियम के समय में भी परमेश्वर के लोगों के लिए मानकों के रूप में बने हुए थे।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 3:7-15 में, उसने यह इंगित किया कि भजन संहिता 95:7-11 ने इस्राएल को शिक्षा दी कि वह परमेश्वर के विरूद्ध बलवा न करे।

इब्रानियों 12:5,6 दिखाता है कि नीतिवचन 3:11, 12 यह तर्क देता है कि इस्राएल को निरूत्साहित नहीं होना है जब परमेश्वर उसको अनुशासित करता है।

इब्रानियों 12:13 उसके श्रोताओं को नीतिवचन 4:26 का अनुसरण करने और धार्मिकता के मार्ग के ऊपर चलते रहने के लिए निर्देश देता है।

और इब्रानियों 13:6 में, भजन संहिता 115:6-7 को उदधृत करते हुए, लेखक यह तर्क देता है कि उसके श्रोताओं को परमेश्वर में आश्वासन का अंगीकार करना चाहिए।

ये सभी संदर्भ पुराने नियम के नैतिक दायित्वों की ओर संकेत देते हैं जो कि निरन्तर मसीह के अनुयायियों के ऊपर भी लागू होते हैं।

युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियाँ

चौथे स्थान पर, लेखक ने पुराने नियम से कई युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियों को उदधृत किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कई संदर्भों में, पुराने नियम के लेखकों ने "अन्तिम दिनों" के बारे में भविष्यद्वाणियाँ की थीं। उन्होंने लिखा कि परमेश्वर उस समय क्या करेगा जब इस्राएल का बन्धुवाई से अन्त होगा और परमेश्वर का विजयी राज्य पूरे संसार में चहुँ ओर फैल जाएगा। इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम की कई युगान्तकालीन भविष्यद्वाणियों का उपयोग यह प्रगट करने के लिए किया है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय और आशीषें मसीह में पूरी होंगी।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:6 ने व्यवस्थाविवरण 32:43 को उदधृत किया है जिसे जैसा कि सेप्टुआजिन्त अर्थात् सप्तति अनुवाद, जो कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है, में अनुवादित किया गया था। यह आयत कहती है कि स्वर्गदूत नम्रता से उस समय दण्डवत् करेंगे जब परमेश्वर उसके सारे शत्रुओं के ऊपर अपनी अन्तिम विजय को प्राप्त करेगा।

इसी तरह से, इब्रानियों 1:10-12 में, लेखक ने भजन संहिता 102:25-27 उदधृत किया है। यह संदर्भ भविष्यद्वाणी करता है कि सृष्टि का समकालीन प्रबन्ध, जिसमें स्वर्गदूतों को बहुत ज्यादा सम्मान मिलता है, इतिहास के अन्त में नाश कर दिया जाएगा।

इब्रानियों 1:13 भजन संहिता 110:1 को उदधृत करते हुए यह प्रगट करता है कि दाऊद के महान् पुत्र की विश्वव्यापी सम्प्रभुता की भविष्यद्वाणी स्वर्गदूतों के ऊपर मसीह को महिमा देगी।

इब्रानियों 5:6 और 7:17 में, लेखक ने भजन संहिता 110:4 को इंगित किया है। उसने भविष्यद्वाणी के ऊपर जोर दिया है कि दाऊद का महान् पुत्र उसके राजकीय महायाजकपन को स्वयं नहीं लेगा अपितु वह इसे परमेश्वर की ओर से प्राप्त करेगा।

इब्रानियों 8:8-12 में, लेखक ने यिर्मयाह 31:31-34 की ओर संकेत दिया है। ये आयतें यह भविष्यद्वाणी करती हैं कि, इस्राएल की बन्धुवाई के उपरान्त, नई वाचा मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा में मनुष्य की असफलता की समस्या के ऊपर विजय को पा लेगी।

इब्रानियों 10:16,17 एक बार फिर यिर्मयाह 31 की ओर संकेत करते हुए यह प्रगट करती है कि कैसे मसीह में नई वाचा आगे बलिदानों की आवश्यकता को मिटा देगी।

इब्रानियों के लेखक ने इसी तरह की अन्य सदृश्य अन्तिम दिनों की, या युगान्तकालीन युग के बारे में, इब्रानियों 7:21, 10:37 और 12:26 में भविष्यद्वाणियों से आग्रह किया है।

राजवंशीय आदर्श

पाँचवे स्थान पर, लेखक ने कई राजवंशीय आदर्शों की ओर संकेत किया है जो कि दाऊद की वंशावलियों के द्वारा भजन संहिता में स्थापित किए गए थे।

ये संदर्भ दाऊद के राजवंश में परमेश्वर के लिए प्रत्येक के लिए सेवा और विश्वासयोग्यता के मानकों को व्यक्त करते हैं। परन्तु, सर्वोत्तम रूप में, दाऊद के पुराने नियम के वंशज इन मानकों तक केवल अपूर्ण रूप से ही पहुँच पाए। इब्रानियों के लेखक ने यह जोर दिया कि यीशु ही दाऊद के राजकीय घराने के आदर्शों की सर्वोच्च, सिद्ध पूर्णता है।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 1:5 में, लेखक ने भजन संहिता 2:7 और 2 शमूएल 7:14 को उदधृत किया है। ये आयतें इंगित करती हैं कि परमेश्वर ने दाऊद के एक वंशज को जातियों के अधिपतियों के ऊपर राज्य करने के लिए एक राजकीय पुत्र के रूप में गोद ले लिया था।

इब्रानियों 1:8, 9 भजन संहिता 45:6,7 को उदधृत करता है। यह राजकीय वैवाहिक भजन परमेश्वर के राज्य की दाऊद के राजवंश के एक राजा के द्वारा सम्मान दिए जाने से महिमा करता है जो कि धार्मिकता को प्रेम और दुष्टता से घृणा करता है।

इब्रानियों 2:11-12 में, लेखक ने भजन संहिता 22:22 को उदधृत किया है। इस आयत में, दाऊद ने अपनी धार्मिकता के आनन्द का इस्राएलियों की अन्य मण्डली में साझा करने की प्रतिज्ञा की है। लेखक ने इस आयत

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

को यह दिखाने के लिए उपयोग किया है कि यीशु पूर्णता के साथ इस राजवंशीय आदर्श को अब्राहम की सन्तान के साथ उसकी धार्मिकता को साझा करने के द्वारा पूरी करता है।

इब्रानियों 10:5-7 में, लेखक ने भजन संहिता 40:6-8 की ओर संकेत किया है। इन आयतों में, दाऊद ने अपने पूरे शरीर को पशुओं के बलिदानों के स्थान पर समर्पित कर देने की प्रतिज्ञा की है। लेखक इसे यीशु के ऊपर लागू करता है जिसका क्रूस के ऊपर शारीरिक बलिदान इस आदर्श के लिए सर्वोच्च, युगान्ताकालीन पूर्णता थी।

अभी तक हमने इब्रानियों में यीशु के चारों ओर घटित होती हुई अन्तिम दिन की आवर्ती विषय-वस्तु और लेखक के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के लिए पुराने नियम के समर्थन के ऊपर देखा। अब हम संक्षेप में तीसरे पुनरावृति हुए तत्व को देखने की स्थिति में हैं: जो कि लेखक का विश्वास में दृढ़ता से बने रहने के लिए दिया हुआ उपदेश है।

दृढ़ विश्वास के लिए उपदेश

इब्रानियों के पत्र का लेखक उसके सुनने वालों को कई तरीकों से विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करता है। वहाँ पर पुराने नियम से बहुत सारे उद्धरणों को लिया गया है, वे सभी इस पूर्वानुमान के साथ हैं कि परमेश्वर निरन्तर उसके प्रयोजनों को प्राप्त करता रहेगा और प्राथमिक तौर पर इन अन्तिम दिनों में, अपने पुत्र को भेजने के द्वारा। उन लोगों के उदाहरण जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ सताव को सहन किया, विशेषकर इब्रानियों 11 में, विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए एक बड़े नमूने के रूप में दिया गया है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, विशेषकर मसीह स्वयं, "जिसने उस [महिमा] को जो उसके आगे धरा था, क्रूस का दुख," लज्जा की चिन्ता न करते हुए सहा, ताकि वह स्वर्ग को प्राप्त करे – यह वह नमूना है जिसका अनुसरण मसीहियों को आज करने के लिए दिया गया है।

- **डा. शिमौन विबर्ट**

हमारे पूर्ववर्ती अध्याय में, हमने यह उल्लेख किया था कि, इब्रानियों 13:22 में, इब्रानियों के लेखक ने पूरी पुस्तक को "मेरे उपदेश की बातों" के रूप में वर्णित किया था। और यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कैसे इनकी गिनती करते हैं, इब्रानियों में लगभग 30 स्पष्ट उपदेश सम्मिलित हैं। जैसा कि हम देखेंगे कि, प्रत्येक उपदेश एक विशेष विषय को स्पर्श करता है, परन्तु इन सभों की रूपरेखा मूल श्रोताओं को मसीह के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता में दृढ़ता से बने रहने के लिए दी गई बुलाहट है।

हमारे अध्याय में इस समय, हम विश्वास में दृढ़ता के लिए लेखक के द्वारा दिए हुए उपदेश के दो महत्वपूर्ण गुणों की ओर देखना चाहते हैं। सर्वप्रथम, हम उन प्रतिक्रिया के ऊपर कुछ टिप्पणियाँ देंगे जिनकी लेखक ने अपने श्रोताओं से पाने की अपेक्षा की है। और दूसरा, हम ये ध्यान देंगे कि कैसे उसने विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए उसके श्रोताओं को प्रेरणा प्रदान की है। आइए सर्वप्रथम हम प्रतिक्रियाओं की उस मात्रा को देखें जिनका लेखक आह्वान् करना चाहता है।

प्रतिक्रियायें

इब्रानियों की पुस्तक की उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक प्रतिक्रियाओं की सँख्या की मात्रा से है जिसमें लेखक उसके श्रोताओं को प्रोत्साहित करता है। अब, जब हम प्राचीन भाषाओं में से किसी एक जैसे नए नियम की यूनानी का प्रयोग करते हैं, तो अक्सर किसी एक विशेष अभिव्यक्ति के लिए अर्थ की बारीकी की पहचान करना असम्भव होता है। इसलिए हम स्वयं को केवल कुछ अपेक्षाकृत स्पष्ट उदाहरणों तक सीमित करेंगे। सामान्य रूप में, लेखक के उपदेश उसके श्रोताओं को उसकी पुस्तक भावनात्मक, धारणात्मक और व्यवहारात्मक रूप में लागू करने के लिए उत्साहित करती है। मूल श्रोताओं को विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए, यह महत्वपूर्ण था कि वे प्रतिक्रियाओं की इस बड़ी सँख्या की ओर अपना ध्यान देते।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रथम, इब्रानियों के लेखक ने अक्सर उसके श्रोताओं को उनके विश्वास के प्रति भावनात्मक आयाम में उपदेश दिया। इब्रानियों 3:8, 15 में वह कहता है कि, "अपने मनों को कठोर न करो।" इसी अध्याय की आयत 13 में हम पढ़ते हैं कि, "एक दूसरे को समझाते रहो...ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन कठोर हो जाए।" इन्हीं विचारों के साथ, अध्याय 4:1 मे वह कहता है कि, "आओ हम सावधान रहें" या और अधिक शाब्दिक कहना – और इस संदर्भ में उत्तम भी है - "परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने से डरना नहीं चाहिए।" वह अपने श्रोताओं को 4:16 में उत्साहित करता है कि "हियाव बाँधें," या साहसी हों, जब वे परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास सहायता के लिए पहुँचते हैं। वह उनको अध्याय 10:22 में "सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप जाएँ।" और अध्याय 10:35 में वह उन्हें उपदेश देता है कि, "अपने हियाव को न छोड़ें" या साहस को।

जितना ज्यादा इब्रानियों के लेखक के लिए ये भावनात्मक बल महत्वपूर्ण थे, उन्हीं के साथ वह उसके श्रोताओं को अपने मूलपाठ को धारणात्मक स्तर पर लागू करने के लिए उपदेश देता है। वह चाहता था कि उसके प्रेरित शब्दों का प्रभाव उनके धर्मवैज्ञानिक सिद्धान्तों और मान्यताओं के ऊपर पड़े। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 2:1 में वह अपने श्रोताओं को जो कुछ उन्होंने सुना है उसके ऊपर "ज्यादा स्थिरता से ध्यान देने" के लिए कहता है। अध्याय 3:1 में लेखक यीशु के "ऊपर [उनके] ध्यान को लगाने" के लिए कहता है। और वह उन्हें अध्याय 6:1 में "मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ने" और अपने ज्ञान और समझ में विकास करने के लिए उत्साहित करता है।

रूचिपूर्ण बात यह है कि, इब्रानियों का लेखक आरम्भ में ही विशेष व्यवहारात्मक तत्वों के ऊपर जोर नहीं देता है। यह सुनिश्चित हो कि उसके उपदेशों में सामान्य तौर पर व्यावहारिक उपयोग निहित हैं, अपितु उसके अधिकांश व्यावहारिक उपदेश उसकी पुस्तक के अन्त में प्रगट होते हैं। इब्रानियों 12:16 में उसने अपने श्रोताओं को यह उपेदश दिया है कि "ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी या अधर्मी हो जाए।" और अध्याय 13:1-19 में उसने अतिथि-सत्कार, विवाह, मसीह के नाम का अंगीकार करना, और भले कार्यों जैसे विषयों को सम्बोधित किया है।

उपदेशों की यह सँख्या उन कई तरीकों को प्रदर्शित करती है जिनमें इब्रानियों का लेखक उसके श्रोताओं से उसकी पुस्तक के प्रति प्रतिक्रिया चाहता था। स्पष्ट है कि, उन्हें उनकी भावनाओं, विचारधाराओं और व्यवहारों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता थी यदि वे मसीह की विश्वासयोग्य सेवकाई के प्रति विश्वास में दृढ़ रहना चाहते थे।

हमने देखा कि इब्रानियों के लेखक ने प्रतिक्रियाओं की एक बड़ी सँख्या के लिए दृढ़ विश्वास के आह्वान् के लिए उपदेश दिए हैं। अब हमें ध्यान देना चाहिए कि कैसे लेखक ने दृढ़ विश्वास में बने रहने के लिए दोनों अर्थात् सकारात्मक और नकारात्मक प्रेरणाओं को उत्साहित किया है।

प्रेरणाएँ

एक तरफ तो, लेखक निकटता से उसके कई उपदेशों के साथ सकारात्मक रूप से सम्बद्ध है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 4:13-16 में वह मसीह से अनुग्रह और सहायता को प्राप्त कर रहा है। और 13:16 में वह अपने श्रोताओं को उस ज्ञान के साथ प्रेरित करना चाहता है जिसमें कुछ निश्चित कार्य परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। समय समय पर इब्रानियों के लेखक ने शाश्वत प्रतिफल को विश्वासयोग्य जीवन यापन की प्रेरणा के रूप में थामे रखा है। इब्रानियों 10:35 में, उदाहरण के लिए, वह ऐसा कहता है कि:

इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है (इब्रानियों 10:35)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

तथापि, दूसरी तरफ, इब्रानियों का लेखक अक्सर उसके श्रोताओं को प्रेरित करने के लिए नकारात्मक उपदेश देता है। ये उपदेश मुख्यत: ईश्वरीय न्याय के खतरे और चेतावनियों के थे। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 2:2-3 में, वह ध्यान दिलाता है कि वे जिन्होंने स्वर्गदूतों की आज्ञा नहीं मानी उन्हें सजा दी गई थी। इसलिए, कोई कैसे जिसने मसीह में उद्धार के वचन का अनदेखा किया यह आशा कर सकता है कि वह परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा? अध्याय 6:4-8 में वह सचेत करता है कि प्रत्येक जो कोई पतित हो गया वह "श्रापित होने के खतरे में है।" अध्याय 10:26-31 में वह "दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा," की चेतावनी देता है।

> **इब्रानियों की पुस्तक के बड़े विषयों में से एक विश्वास में दृढ़ बने रहने की आवश्यकता का है। आप इब्रानियों की पुस्तक को इसकी चेतावनियों और उपदेशों के बिना नहीं पढ़ सकते हैं और जो कुछ इसका लेखक कह रहा है, से बच नहीं सकते हैं, क्योंकि वह वास्तव में प्रचार करता है, कि उन्हें विश्वास में दृढ़ होने की आवश्यकता है; उन्हें आगे बढ़ते रहने की आवश्यकता है; उन्हें पीछे हटने की आवश्यकता नहीं है, अपितु उन्हें मसीही जीवन में आगे की ओर बढ़ते चले जाना है। अब, कैसे वह ऐसा करता है? ठीक है, मैं सोचता हूँ कि वह दोनों को अर्थात् प्रोत्साहन और चेतावनियों को सुन्दरता से सन्तुलित करता है, और ये एक तरह से एक ही सिक्के को दो पहलू हैं। बारी बारी से, प्रोत्साहन के शब्दों में, इब्रानियों की पुस्तक मसीह और पुराने नियम के चरित्रों, लोगों, वाचाओं की तुलना करने में प्रसिद्ध है। वह मूसा से सर्वश्रेष्ठ है; वह सर्वश्रेष्ठ विश्राम को लाता है; वह सर्वश्रेष्ठ याजक है; वह सर्वोत्तम बलिदान है...सिक्के के उलटे पहलू में, यद्यपि, चेतावनियाँ भी पाई जाती हैं। इब्रानियों की पुस्तक में चेतावनियों का कार्य मसीही श्रोताओं को चौकन्ना करना और पाठकों से यह कहना है कि, "यदि मैं विश्वास में दृढ़ नहीं रहा, यदि मैं मसीह से अपनी आँखों को हटा लेता हूँ, यदि मैं उसके साथ निरन्तर चलना छोड़ देता हूँ और उसकी ओर देखता हूँ, यह देखते हुए कि वह अपने सारे वैभव और महिमा में कौन है – कि वह महिमा का प्रभु है, महान् महायाजक है जो आ गया है – इतना सब कुछ होते हुए, तब उससे बाहर उद्धार नहीं हो सकता है...इसलिए, दोनों इकट्ठे मिलकर सकारात्क प्रोत्साहन देते हैं, और साथ ही, दौड़ में दौड़ते रहने के लिए नकारात्मक सुदृढ़ीकरण को देते हैं, यीशु के ऊपर अपनी आँखों को लगाए रखना, जो कि हमारे विश्वास का लेखक और सिद्ध करने वाला है।**
>
> **- डा. स्टीफन जे. वैल्लूम**

इब्रानियों के श्रोताओं के विरूद्ध न्याय के खतरे अक्सर व्याख्याकारों को परेशानी में डाल देते हैं क्योंकि वे ऐसा संकेत देते हैं कि मानो सच्चे विश्वासी अपने उद्धार को खो देंगे। इसी कारण से, इब्रानियों के इन अंशों पर अक्सर इस विषय के लिए जो एक दृष्टिकोण को थामे हैं और जो दूसरे दृष्टिकोण को, दोनों दृष्टिकोण वाले विषय मसीहियों के मध्य में युद्धभूमि बने हुए है। यद्यपि समय हमें अनुमति नहीं देगा कि हम इस धर्मविज्ञानीय विषय के ऊपर यहाँ गहराई से विचार विमर्श करें, पर फिर भी इस विषय के दो महत्वपूर्ण पहलुओं के ऊपर टिप्पणी देना सहायतापूर्ण होगा।

पहला, हमें सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि इब्रानियों की पुस्तक एक तकनीकी विधिवत् अर्थात् व्यवस्थित धर्मविज्ञान नहीं है। ऐसा कहने से हमारा अर्थ यह है कि, अक्सर, पवित्रशास्त्र मसीही धर्मशास्त्रियों और धर्मवैज्ञानिक परम्पराओं से भिन्न कई तरह की विभिन्न शब्दावलियों, यहाँ तक उद्धार के बारे में भी कई शब्दावली का उपयोग करता है। सच्चाई तो यह है कि कलीसिया की प्रत्येक शाखा एक निश्चित धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों को बहुत ही संकीर्ण रूप में उन तरीकों की अपेक्षा जिन्हें पवित्रशास्त्र में उपयोग किया है, उपयोग करने की प्रवृत्ति रखते हैं। यह अभ्यास लगभग अपरिहार्य है यदि हम यह आशा करें कि हमारे पास उलझन रहित एक धर्मवैज्ञानिक तंत्रप्रणाली हो। तथापि, यह दृष्टिकोण भी खतरनाक है क्योंकि इसमें हमारे लिए शब्दावलियों और अभिव्यक्तियों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

की हमारी स्वयं की संकीर्ण परिभाषा को इब्रानियों जैसे पुस्तक में पढ़ना आसान होता है। यह खतरा विशेष रूप से स्पष्ट है जब बात उस तरीके को समझने की आती है जिसमें इब्रानियों उन लोगों के बारे में वर्णित करती है जिन्होंने धर्मत्याग कर दिया या वे जो मसीह से पीछे हट गए।

एक तरफ तो, यह ध्यान देना सहायतापूर्ण है कि इब्रानियों का लेखक कभी भी धर्मत्याग करने वाले को "धर्मी" के रूप में वर्णित नहीं करता है। नए नियम में, यह शब्द निरन्तर सच्चे विश्वासियों के लिए आरक्षित की गई है। परन्तु दूसरी तरफ, इब्रानियों का लेखक कुछ ऐसी शब्दावलियों को भी उपयोग नहीं करता है जिन्हें इव्हैजलिकल अक्सर केवल सच्चे विश्वासियों के लिए ही आरक्षित करते हैं, यद्यपि नया नियम ऐसा नहीं करता है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 6:4-6 में, लेखक चेतावनी देता है कि:

> **क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं... वे भटक [सकते] हैं (इब्रानियों 6:4-6)।**

कठिनाई यहाँ पर यह है कि हम में से बहुत से इन्हें या इन जैसे ही अभिव्यक्तियों को हमारी तकनीकी धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में केवल सच्चे विश्वासियों का वर्णन करने के लिए उपयोग करते हैं। अन्य उदाहरणों में इब्रानियों 10:29 सम्मिलित है जहाँ पर धर्मत्याग करने वाले का वर्णन वाचा के लहू के द्वारा "पवित्र" के रूप में किया गया है। या अध्याय 10:32 कहता है कि उन्होंने "ज्योति को पाया" था।

वास्तव में, ऐसे ही विवरणों का उपयोग नए नियम में उनके लिए किया गया है जो उसमें भाग लेते हैं जिसे धर्मशास्त्री अक्सर "दृश्य कलीसिया" कह कर पुकारते हैं। यह विशेष रूप से "अदृश्य कलीसिया" या सच्चे विश्वासियों की देह से भिन्न है। दृश्य कलीसिया के लोग वे हैं जो कलीसिया में बाहरी तौर पर भाग लेते हैं परन्तु आवश्यक नहीं कि वे आन्तरिक रूप से भी इसमें भाग लें। कलीसिया में यह भिन्नता उस तरीके के सदृश्य है जिसमें रोमियों 2:28, 29 यहूदियों के मध्य में की गई जिसमें एक यहूदी ऐसा था जो केवल "बाहरी" तौर पर यहूदी था – यूनानी भाषा में *फनेरोस* (φανερός) - बाहरी तौर पर, अर्थात् शारीरिक खतना, और दूसरा जो "आन्तरिक" तौर पर यहूदी थे – यूनानी में *क्रूपटोस* (κρυπτός) – और हृदय में खतना किए हुए के मध्य में भिन्नता करती है।

दूसरा, हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि धर्मत्याग के लिए ईश्वरीय न्याय इब्रानियों के लिए विशेष नहीं है। उदाहरण के लिए, हम इस जैसी ही चेतावनियों को 1 कुरिन्थियों 10:1-13 और 2 पतरस 2:21, 22 जैसे संदर्भों में पाते हैं। सम्पूर्ण नया नियम यह शिक्षा देता है कि वे जिनके पास मसीह में बचाए जाने वाला विश्वास है अन्त तक बने रहेंगे। परन्तु जो मसीह का पूरी तरह से इन्कार कर देते हैं वे अपने विश्वास को बचाने वाले विश्वास के रूप में प्रदर्शित नहीं करते हैं। इसकी अपेक्षा, उनका विश्वास केवल मात्र जिसे धर्मशास्त्री अक्सर "अस्थाई" या "पाखण्डी विश्वास" कह कर पुकारते हैं, वाला था। जैसा कि 1 यूहन्ना 2:19 में धर्मत्यागी के बारे में विवरण दिया गया है कि:

> **वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं, क्योंकि यदि वे हम में के होते, तो हमारे साथ रहते; पर निकल इसलिए गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं (1 यूहन्ना 2:19)।**

किसी भी समय कोई भी जब मसीही विश्वास से पीछे हट जाता है, तो वह यह प्रगट करता है कि वह वास्तव में अदृश्य कलीसिया से सम्बन्धित नहीं है।

> **इब्रानियों में चेतावनियों वाले पाँच संदर्भ मिलते... अधिकांश यह तर्क देते और सारांशित करते हैं कि इन पाँचों में वास्तव में एक ही बात है, और इसलिए हम चेतावनियों को बहुवचन में सम्बोधित कर सकते हैं,**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि मानो इनका एक ही मुख्य उद्देश्य है। और पास्तरीय रूप से, उनका उद्देश्य बड़ा ही साधारण है। वह उसकी मण्डली में चाहता है कि प्रत्येक के पास दृढ़ विश्वास हो और वे मसीह के पीछे उसका अनुसरण करें। अब यहाँ पर कुछ, वास्तविक, बातें हैं, जिन्हें किया जाना चाहिए। ये वास्तविक चेतावनियाँ हैं। ये काल्पनिक नहीं हैं। इन्हें डराने की रणनीति में नहीं बनाया गया है...परन्तु यह बात जिसे किए जाने की आवश्यकता है वह यह है कि वह उन्हें इनका सम्बोधन एक पास्टर के रूप में रविवार की सुबह की एक आराधना मण्डली में कर रहा है। परन्तु वह सर्वज्ञानी नहीं है। वह उसकी मण्डली की आत्मा में प्रत्येक व्यक्ति की शाश्वत स्थिति को नहीं जानता। वह जानता है कि वे मसीह का अंगीकर कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में, नए नियम के धर्मविज्ञान में, समय ही इसे बताएगा। मेरे कहने का अर्थ है कि, हम 1 यूहन्ना 2:19 के उदाहरण को देखते हैं, सच्चाई तो यह है कि, वे जिन्होंने विश्वास को छोड़ दिया है, जिन्होंने विश्वास के समुदाय को, बाहर जाने के द्वारा, छोड़ दिया है, ये प्रदर्शित करते हैं कि वे हमें में से वास्तव में किसी को भी नहीं जानते थे; यूहन्ना आसिया की कलीसिया को ऐसा लिखता है। और इस तरह से, हम यहाँ पर इब्रानियों में देखते हैं कि वह मसीह में विश्वास के अंगीकार किए जाने को सम्बोधित करता है, परन्तु वास्तव में केवल समय ही बतलाएगा कि वे उसको जानते हैं या नहीं।

- डा. बैरी जौसलिन

इब्रानियों के पुस्तक के विषय-वस्तु और संरचना के ऊपर हमारे अध्याय में, हमने इस पुस्तक में आवर्ती विषय-वस्तु के तीन तत्वों को देखा। अब, हम हमारे इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: जो कि इस पुस्तक की आलंकारिक व्यक्तव्यीय संरचना से है।

आलंकारिक संरचना

जैसा कि हमने अपने पूर्ववर्ती अध्याय में देखा, इब्रानियों की पुस्तक के मूल श्रोता सताव का सामना कर रहे थे। स्थानीय यहूदी समुदाय की झूठी शिक्षाओं का आलिंगन करने की परीक्षा व्यापक रूप से फैली हुई थी। और इब्रानियों के लेखक ने उसके श्रोताओं को मसीह के प्रति अपनी आशा को न छोड़ने और उससे पीछे न हटने की प्रेरणा इन शिक्षाओं से दी। इस लिए, अब कैसे इब्रानियों के लेखक ने इस पुस्तक की विषय-सूची को अपने उद्देश्य की प्राप्ति को पूरा करने के लिए इकट्ठा किया? उसकी यह आलंकारिक सरंचना कैसी दिखाई देती है?

हम इब्रानियों की आलंकारिक संरचना को कई स्तरों पर देख सकते हैं, परन्तु हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, हम इस पुस्तक के केवल पाँच मुख्य भागों को ही देखेंगे। ये भाग हमें एक ऐसे भाव को प्राप्त करने में सहायता करेंगे कि कैसे लेखक ने उसके श्रोताओं को मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की।

- पहला मुख्य भाग 1:1-2:18 में स्वर्गदूतों के प्रकाशनों के बारे मान्यताओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है।
- दूसरा मुख्य भाग 3:1-4:13 में मूसा के अधिकार के ऊपर विचार विमर्श करता है।
- तीसरा मुख्य भाग 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के राजकीय महायाजकपन को सम्बोधित करता है।
- चौथा मुख्य भाग 8:1-11:40 में नई वाचा के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है।
- पाँचवा मुख्य भाग 12:1-13:25 में व्यावहारिक दृढ़ता के साथ निपटारा करता है।

स्वर्गदूतीय प्रकाशन 1:1-2:18

इब्रानियों के लेखक ने इन मुख्य भागों का उपयोग उसके श्रोताओं को इसलिए प्रेरित करने के लिए किया ताकि वे मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें, यहाँ तक कि सताव के मध्य में भी। आइए सबसे पहले हम यह देखें कि कैसे इब्रानियों की पुस्तक स्वर्गदूतों के प्रकाशनों को 1:1-2:18 में निपटारा करती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि हमने हमारे पूर्ववर्ती अध्याय में उल्लेख किया था, कि कुमरान से प्राप्त कई यहूदी कुण्डल पत्रों, के साथ साथ इफिसियों और कुलुस्सियों जैसी पुस्तकें, ये इंगित करती हैं कि पहली शताब्दी में यहूदी समुदायों में अक्सर स्वर्गदूतों को सामर्थी, महिमामयी प्राणियों के रूप में महिमा मिलती थी जो कि ईश्वरीय प्रकाशनों को निम्न स्तर के मानवीय प्राणियों तक लेकर आते थे।

स्थानीय यहूदी समुदाय के दृष्टिकोण बाइबल आधारित संदर्भों में निहित थे, परन्तु उन्होंने स्वर्गदूतों को अत्यधिक सम्मान दिया। स्वर्गदूतों के दिए गए इस अतिशयोक्तिपूर्ण सम्मान ने उनके लिए गंभीर चुनौती को खड़ा कर दिया जो मसीह का अनुसरण कर रहे थे। कुल मिलाकर, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि यीशु लहू और माँस में, एक नम्र व्यक्ति के रूप में आया। फिर कैसे कोई जो उसका अनुसरण करता है की अपेक्षा स्वर्गदूतों के प्रकाशनों का अनुसरण कर सकता है?

इब्रानियों के लेखक ने इस चुनौती का उत्तर पाँच चरणों में दिया है। पहले, इब्रानियों 1:1-4 में, उसने लिखा है कि उसके श्रोताओं को यीशु का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि यीशु ही परमेश्वर के ईश्वरीय प्रकाशन का सर्वोच्च स्त्रोत है। लेखक ने यह स्वीकार किया है कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों और अन्य माध्यमों के द्वारा सम्पूर्ण पुराने नियम के इतिहास में बात की। परन्तु उसने यह जोर दिया कि, अन्तिम दिनों के लिए राजकीय महायाजक के रूप में ईश्वरीय रूप से ठहराए हुए होने के कारण, यीशु उस प्रकाशन को लेकर आया जो कि स्वर्गदूतों के द्वारा दिए हुए किसी भी प्रकाशन से उत्तम है।

अध्याय 1:5-14 में, इब्रानियों के लेखक ने विवरण दिया है कि यीशु स्वर्गदूतों से कहीं ज्यादा सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि वह एकलौता ही परमेश्वर का मसीहवाचीय पुत्र है। उसने ध्यान दिया है कि यीशु दाऊद के घराने के आदर्शों को पूरा करता है। और यीशु ने परमेश्वर के मसीहवाचीय पुत्र के रूप में परमेश्वर के सारे शत्रुओं के ऊपर दाऊद की भविष्यद्वाणी को पूरा किया है। इसके विपरीत, उसने ध्यान दिया है कि स्वर्गदूत उन आत्माओं से ज्यादा कुछ भी नहीं हैं जिन्हें उनकी सेवा करने के लिए भेजा गया है जो कि मसीह में उद्धार के उत्तराधिकारी बनते हैं।

अध्याय 2:1-4 में, लेखक ने उसके श्रोताओं को उद्धार के महान् सन्देश के लिए सावधानी से ध्यान देने के लिए उपदेश दिया है जो कि यीशु के द्वारा पहले पहल उदघोषित किया गया है। उसने उन्हें स्मरण दिलाया है कि अतीत में जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिए हुए सन्देश का उल्लंघन किया उन्होंने परमेश्वर से सजा को प्राप्त किया है। परिणामस्वरूप, उसके पाठकों को यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर के न्याय से बचना सम्भव है यदि वे मसीह, जो हमारा उद्धार है, के द्वारा प्रकाशित महान् उद्धार को अनदेखा कर देते हैं।

इब्रानियों 2:5-9 मसीह की सर्वश्रेष्ठता की मान्यता का समर्थन यह विवरण देते हुए करता है कि यीशु अब स्वर्गदूतों के ऊपर न्यायी है। और भविष्य में सभी विश्वासी उसके साथ राज्य करेंगे। लेखक यह ध्यान देता है कि परमेश्वर ने अस्थाई रूप से मनुष्य को स्वर्गदूतों से थोड़ा सा निम्न बनाया है, परन्तु उसने मनुष्य को आने वाले संसार में सारी सृष्टि के ऊपर राज्य करने के लिए ठहराया है। मानव प्राणी को दी हुई यह अन्तिम महिमा परमेश्वर के राजकीय महायाजक के रूप में स्वर्ग में मसीह के वर्तमानकाल राज्य में पूर्वानुमानित है।

और अन्त में, इब्रानियों 2:10-18 में, लेखक यह प्रदर्शित करता है कि

यीशु ही अब्राहम का वंशज है। और यीशु ही अब्राहम के वंशजों के साथ, न कि स्वर्गदूतों के साथ अपनी महिमा को साझा करेगा। लेखक दाऊद और यशायाह को इस भाग में यह दिखाते हुए उदधृत करता है कि यीशु का सम्बन्ध अब्राहम के परिवार के वंश से है। वह यह भी विवरण देता है कि यीशु ने, अपनी मानवता में, गिरे हुए स्वर्गदूत, इबलीस की सामर्थ्य को तोड़ दिया है। ऐसा स्वर्गदूत को स्वतंत्र करने के लिए नहीं था, परन्तु अब्राहम के वंशजों को मृत्यु के डर से स्वतंत्र करने के लिए था। मसीह की मानवता ने उसको दया से भरा हुआ और विश्वासयोग्य महायाजक बना दिया जिसने उसके लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित किया।

मूसा का अधिकार 3:1-4:13

यह देख लेने के बाद कि कैसे इब्रानियों के लेखक ने स्वर्गदूतीय प्रकाशनों के बारे में यहूदी शिक्षाओं के साथ निपटारा किया, हमें अब इस पुस्तक के दूसरे मुख्य भाग की ओर मुड़ना चाहिए। इब्रानियों 31-4:13 में, उसने मूसा के अधिकार की चुनौतियों का उत्तर दिया है। इस्राएल में कोई भी मनुष्य को मूसा से ज्यादा सम्मान नहीं मिला था।

क्योंकि मूसा को सम्मान दिया गया, इसलिए हमें स्थानीय यहूदी शिक्षाओं के कारण आश्चर्य में नहीं पड़ना चाहिए। वे इब्रानियों के श्रोताओं को चुनौती देते हैं कि जो कुछ मूसा को परमेश्वर ने प्रकाशन में दिया उसकी आज्ञा पालन की जानी चाहिए, परन्तु मसीह को सम्मान न देते हुए। जैसा कि हम इस भाग में देखेंगे, इब्रानियों का लेखक मूसा को भी सम्मान देता है। परन्तु यद्यपि मूसा परमेश्वर का एक विश्वस्त सेवक था, यीशु कहीं अधिक श्रेष्ठ है क्योंकि वह अन्तिम दिनों में परमेश्वर का राजकीय महायाजक था।

पुस्तक का यह भाग तीन मुख्य खण्डों में विभाजित होता है, जिनमें से प्रत्येक में कम से कम एक उपदेश है जो यीशु के अधिकार को मूसा के अधिकार के ऊपर होना दिखाते हैं। इब्रानियों 3:1-6 में,पहला खण्ड स्पष्ट रूप से इब्रानियों के श्रोताओं को मूसा के ऊपर यीशु का सम्मान किए जाने की बुलाहट देता है। यह खण्ड इंगित करता है कि मूसा ने परमेश्वर के घर, अर्थात् मिलाप वाले तम्बू का निर्माण किया। परन्तु परमेश्वर के राजकीय पुत्र होने के नाते, यीशु परमेश्वर के घर, अर्थात् कलीसिया के ऊपर राज्य करता है।

सुनिए इब्रानियों 3:1-3 को, जहाँ पर लेखक ने उसके श्रोताओं को यह कहते हुए उपदेश दिया है कि:

यीशु पर... ध्यान करो... [जो] मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है (इब्रानियों 3:1-3)।

लेखक ने जोर दिया कि यीशु, मूसा की तरह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था, परन्तु यीशु "कहीं अधिक महिमा के योग्य" था।

इन आयतों के बाद, अध्याय 3:7-19 में, लेखक ने उसके श्रोताओं को हृदय की कठोरता और इस्राएलियों की तरह के विद्रोह से बचने के लिए चेतावनी दी है, जिन्होंने मूसा के विरूद्ध बलवा किया था। लेखक ने अपने उपदेश को उन लोगों की ओर इंगित करते हुए समर्थन पाया है जिन्होंने मूसा का अनुसरण किया परन्तु प्रतिज्ञात् भूमि में प्रवेश नहीं कर पाए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया था। बहुत कुछ इसी तरह से, वे जो मसीह का अनुसरण करते हैं मसीह ही केवल साझा करेंगे यदि वे अन्त तक मजबूती से अपने मूल विश्वास को पकड़े रहेंगे। अविश्वास ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञात् भूमि से बाहर रखा; अविश्वास मसीह में भी ऐसा ही करेगा।

इब्रानियों 4:1-13 में, लेखक ने विस्तार से मसीह के अनुयायियों और मूसा के अनुयायियों के मध्य में तुलना किया है। उसने अपने श्रोताओं को उपदेश दिया कि वे परमेश्वर के विश्राम में पहुँचने के लिए हर सम्भव प्रयास करें। पुराने नियम का उपयोग करते हुए, उसने विवरण दिया है कि परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना अभी भी भविष्य की बात है। इसलिए उन्हें अभी भी इन बातों को अपने हृदयों में ले लेना चाहिए कि कैसे परमेश्वर के वचन उनके आगे प्रत्येक बात को नंगा कर देते हैं। यह परमेश्वर ही है जिसे सबको उत्तर देना है। और इसलिए उन्हें उसके विश्राम में प्रवेश करने का भरसक प्रयास करना चाहिए और इस्राएल की जंगल में नकल नहीं करनी चाहिए।

मलिकिसिदक का महायाजकीयपन 4:14-7:28

स्वर्गदूतीय प्रकाशनों और मूसा के अधिकार के साथ निपटारा कर लेने के बाद, इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के बारे में स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को चुनौती दी।

हमारे पूर्ववर्ती अध्याय में, हमने कुमरान में एक मूलपाठ *11वें कुमरान मलिकिसिदक* या *मलिकिसिदक के ऊपर मिदराश* को कुमरान नामक स्थान से पाया था। इस मूलपाठ ने यह चित्रित किया कि मलिकिसिदक एक स्वर्गीय प्राणी था जो कि अन्तिम दिनों में अन्तिम प्रायश्चित के बलिदानों को देने के लिए प्रगट होगा और परमेश्वर के राज्य को प्रस्तुत करेगा। ऐसा आभास होता है कि, मूल श्रोताओं में कुछ लोग इस तरह की शिक्षा से उलझन में पड़ गए थे। मलिकिसिदक के आने की आशा करने की अपेक्षा कोई क्यों यीशु का अनुसरण परमेश्वर के राजकीय महायाजक के रूप में करेगा? इसलिए, इब्रानियों के लेखक ने यह प्रदर्शित किया कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सच्चा राजकीय महायाजक था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ये भाग चार खण्डों में खुलता जाता है। पहला और तीसरा खण्ड मलिकिसिदक के ऊपर मसीह को पकड़े रहने के लिए श्रोताओं को उपदेश देता है, और दूसरा और चौथा खण्ड ऐसा करने के कारण को प्रदर्शित करता है।

इब्रानियों 4:14-16 में, लेखक ने मलिकिसिदक के विषय से उसके श्रोताओं को उस विश्वास को दृढ़ता से थामे रहने के एक उपदेश के द्वारा परिचित कराया है जिसे उन्होंने अंगीकार किया था। उसने उन्हें यह जोर देते हुए प्रोत्साहित किया है कि यीशु एक पूर्ण मानव, पापरहित, महान् महायाजक था जो कि स्वर्ग पर ऊपर चढ़ गया और विश्वासियों के लिए यह सम्भव करता है कि वे उस दया और अनुग्रह को प्राप्त करें जो उनको उनके समय की आवश्यकता में सहायतापूर्ण होगा।

अध्याय 5:1-10 में, इब्रानियों के लेखक ने यह विवरण दिया है कि कैसे यीशु मलिकिसिदक की रीति पर परमेश्वर का राजकीय महायाजक होने की योग्यता रखता है। यीशु ने महायाजक होने की सारी योग्यताओं को अपनी आज्ञाकारिता और दुखों के द्वारा पूरा किया। परन्तु उसने स्वयं को इस पद के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। भजन संहिता 2:7 और भजन संहिता 110:4 को उदधृत करने के द्वारा, लेखक ने यह प्रदर्शित किया कि जिस आशा को इस्राएल ने मलिकिसिदक में रखा था वह वास्तव में दाऊद के राजवंश में पूरी हो गई है। इस तरह से स्वयं परमेश्वर ने यीशु को मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय महायाजक होने के लिए ठहराया। इस तरह से, यीशु उन सभों के लिए शाश्वत उद्धार का स्त्रोत बन गया जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।

इब्रानियों 5:11-6:12 इब्रानियों के श्रोताओं के लिए एक लम्बा उपदेश आरम्भ की बातों को छोड़कर परिपक्वता की ओर आगे बढ़ने का है। लेखक स्वीकार करता है कि उसके श्रोता मसीह और मलिकिसिदक के ऊपर उसके विचार विमर्श को समझने में असमर्थ थे। परन्तु वह उनकी समझ के लिए उन्हें प्रोत्साहित करता है ताकि वे स्वधर्मत्याग में न गिर जाएँ। वह उन्हें चेतावनी देता है कि यदि वे एक सच्चे राजकीय महायाजक में अपने विश्वास से भटक जाते हैं, तो उनके पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं रह जाता है। लेखक अपने श्रोताओं से उच्च आशा रखता है, परन्तु उन्हें उनके आलसीपन और अपरिपक्वता से मुड़ना होगा और जो कुछ परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है उसे पाने के लिए प्रयासरत् होना है।

इब्रानियों 6:13-7:28 में, लेखक निरन्तर यीशु को मलिकिसिदक की रीति के ऊपर राजकीय महायाजकीयपन की पूर्णता के ऊपर अपने विचार विमर्श को आगे बढ़ाता है। विशेषकर, वह यह विवरण देता है कि यीशु के राजकीय महायाजकपन, लेवीय याजकपन के स्थान पर आ गया, या उससे आगे बढ़ गया। जब इब्रानियों को लिखा गया, तब यरूशलेम के मन्दिर में सेवकाइयाँ चल रही थीं। इस तथ्य ने मसीहियों के उस दावे को गम्भीर चुनौती दी थी कि यीशु की मृत्यु ने मन्दिर में लेवीय बलिदानों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया था। इस चुनौती का उत्तर देने के लिए, लेखक ने स्थानीय यहूदी मान्यताओं के ऊपर निर्मित किया कि मलिकिसिदक अन्तिम दिनों में सारे बलिदानों को समाप्त करेगा। परन्तु उसने परमेश्वर के द्वारा भजन संहिता 110:4 में ली हुई शपथ से निष्कर्ष दिया कि यीशु, दाऊद का महान् पुत्र, शाश्वत् रूप से मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय याजक था। इस लिए, यीशु ने लेवीय की बलिदान प्रणाली को समाप्त कर दिया।

लेवीय याजकपन के ऊपर यीशु की श्रेष्ठता को दिखाने के लिए, लेखक ने यह भी ध्यान दिया है कि, उत्पत्ति 14:20 में, अब्राहम ने मलिकिसिदक को जो कि उससे श्रेष्ठ था अपने दशमांश को भेंट में दिया था। परिणामस्वरूप, लेवी, अब्राहम का वंशज होने के नाते, अब्राहम के द्वारा प्रतीकात्मक रूप से ऐसा ही करता है। इसलिए, यह मसीह के लिए उचित था, कि मलिकिसिदक की रीति पर राजकीय महायाजक होने के नाते, लेवीय याजकपन का स्थान ले ले। लेवीयों के बलिदान कभी भी पूरे प्रायश्चित को नहीं ला सकते हैं, परन्तु मलिकिसिदक के याजकपन की पूर्णता के रूप में, मसीह ने सदैव के लिए और सभों के लिए एक ही बार में प्रायश्चित कर दिया है।

प्रचारकों और शिक्षकों के लिए, इब्रानियों के पंसदीदा भागों में से एक यीशु की मलिकिसिदक के साथ तुलना करना है; जो कि पुराने नियम में लगभग एक अज्ञात् याजक है। इस तुलना से पहले, लेखक लेवीय

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

के हारून के याजकपन के साथ तुलना करता है। हारून का याजकपन वंशानुगत था; यह पिता से पुत्र को, और लेवी के गोत्र से स्थानान्तरित हुआ था। यीशु का याजकपन ऐसा नहीं था। वह लेवीयों का उत्तराधिकारी नहीं था क्योंकि वह, यहूदा से, दाऊद के गोत्र से आया था। क्योंकि हारूनवशीय याजक नाशवान थे, हारून का याजकपन पिता से पुत्र को स्थानान्तरित हुआ था। इसके विपरीत, यीशु का याजकपन अनन्तकाल के लिए था। उसका याजकपन सदैव के लिए है; वह अभी भी वैसा ही याजक है...मलिकिसिदक के पास एक याजक होने का कोई मानवीय अधिकार नहीं था, परन्तु वह इतिहास में परमेश्वर की ओर से चुने हुए, एक याजक के रूप में प्रवेश करता है, और फिर ओझल हो जाता है। यीशु भी ऐसा ही करता है, और अपनी पार्थिव सेवकाई के बाद पुनरूत्थान के बाद स्वर्ग पर चला जाता है।

- डा. ऐल्विन पाडीला, अनुवादित किया हुआ।

इब्रानियों के पत्र में दो तरह के याजकपनों के बारे में उल्लेख किया गया है। एक पारम्परिक याजकपन है जो कि हारून की ओर से आरम्भ किया गया और इसका कार्य लेवी के गोत्र के द्वारा किया गया, इसे लेवीय याजकपन कहते हैं। और तब यहाँ पर मलिकिसिदक का बहुत ही असामान्य याजकपन था जो कि कुलपतिकाल के इतिहास में आरम्भ में ही दिखाई देता है और वह प्रभु का याजक था, प्रभु का एक महायाजक, अब्राहम के समय में था। और यीशु की तुलना दोनों से ही, एक ऐसे भाव में की गई है जिसमें लेवीय के याजकपन के ऊपर श्रेष्ठता को दिखाया गया है और दूसरे भाव में महायाजक के रूप में, मलिकिसिदक की श्रेष्ठता को दिखाया गया है...उसका महायाजकीयपन एक अनन्तकाल की नियुक्ति थी। और मलिकिसिदिक के बारे में क्या जानते हैं कि उसके माता पिता नहीं थे; वह दृश्य में अपने पीछे बिना किसी वंशावली के आता है; वह अब्राहम से ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि अब्राहम ने उसको अपने उपहार भेंट किए, उसने उसे अपना दशवांश भेंट में दिया और छोटा ही अपने से श्रेष्ठ को दशवांश भेंट करता है...परन्तु महायाजक यह नमूना, जो कि हर बात में श्रेष्ठ है और उन लोगों से भेंट स्वीकार करता है जो कि कुलपति हैं जिनसे यहूदीवाद और इस्राएल के इतिहास का गठन हुआ है और जिसके अंतर्गत अन्त में लेवीय याजकपन अपने स्थान को लेगा, यह नया याजकपन, मलिकिसिदक के नमूने के ऊपर अधिनियमित किया गया है।

- डा. ऐडवर्ड ऐम. केजिरियन

नई वाचा 8:1-11:40

चौथा मुख्य भाग, इब्रानियों 8:1-11:40 में, नई वाचा के ऊपर ध्यान को केन्द्रित करता है। यहाँ पर, इब्रानियों का लेखक मसीह की श्रेष्ठता के बारे में और ज्यादा वर्णन यह विचार विमर्श करते हुए देता है कि कैसे नई वाचा पुरानी से श्रेष्ठ थी जब परमेश्वर ने मसीह को राजकीय महायाजक के रूप में ठहराया है।

शब्दावली "नई वाचा" यिर्मयाह 31:31 में से निकल कर आती है। इस आयत में, भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की है कि परमेश्वर इस्राएल और यहूदा को अन्तिम दिनों में बन्धुवाई के बाद अन्तिम नवीकरण के लिए एक नई वाचा को प्रदान करेगा। यही युगान्तकालीन वाचा को यशायाह 54:10 में और यहेजकेल अध्याय 34 और 37 में "शान्ति की वाचा" कह कर पुकारा गया है। इस लिए, इस स्थान पर, इब्रानियों का लेखक अपने विचार विमर्श को अन्तिम दिनों के मलिकिसिदक से नई वाचा के विचार विमर्श में परिवर्तित करता है।

इब्रानियों का यह भाग आठ मुख्य खण्डों से मिल कर निर्मित हुआ है। पहला, इब्रानियों 8:1-13 ऐसे विचार से परिचित कराता है जिसमें यीशु स्वर्ग में राजकीय महायाजक होने के नाते नई वाचा की मध्यस्थता करता है।

आयत 1 और 2 में, लेखक स्पष्ट रूप से जिसे वह "जो बातें हम कह [रहा था] रहे हैं" कह कर पुकारता है। वह विवरण देता है कि मसीह, राजकीय महायाजक, "स्वर्ग में सच्चे तम्बू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, परन्तु प्रभु ने खड़ा किया है." में सेवा कर रहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दूसरे शब्दों में, लेवीय याजकपन ने इस भूमिका को पृथ्वी पर पूरा कर दिया था। परन्तु उनका याजकपन व्यवस्था के ऊपर आधारित था। पुराने नियम में, मूसा के साथ स्थापित की गई वाचा पार्थिव लेवीय याजकपन था, परन्तु यह इसलिए असफल हो गया क्योंकि इस्राएल ने पाप किया था।

इसके विपरीत, यिर्मयाह 31 की नई वाचा, असफल नहीं हो सकती है कि क्योंकि, जैसा कि इब्रानियों 8:6 हमें बतलाता है कि:

यह उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बाँधी हुई है (इब्रानियों 8:6)

ये "उत्तम प्रतिज्ञाएँ" परमेश्वर के लोगों को पूर्ण परिवर्तन और उनके पापों से अन्तिम अनन्तकालीन क्षमा को प्रदान करते हैं।

इब्रानियों 9:1-28 में, लेखक ने इस तथ्य के ऊपर विस्तार किया है कि यीशु का स्वर्गीय राजकीय याजकपन लेवीय के याजकपन से श्रेष्ठ था। उसने इस खण्ड को मूसा के पार्थिव मिलाप वाले तम्बू के प्रबन्ध, प्रकाशित होते हुए गुणों से जो कि स्वर्गीय पवित्रस्थान के सदृश्य हैं, का उल्लेख करने के द्वारा आरम्भ किया है। इसके अतिरिक्त, उसने याजकीय क्रियाकलापों का विवरण जैसा कि लेवीय 16:34 में प्रायश्चित के वार्षिक दिन के सम्बन्ध में आदेश दिया गया है, से किया है। ये यह प्रदर्शित करता है कि पार्थिव मिलाप वाले तम्बू के बलिदान पूरी तरह से पाप की समस्या का समाधान नहीं कर सके अपितु प्रत्येक वर्ष इनकी पुनरावृत्ति होती थी। ये बलिदान उस समय तक के लिए ठहराए गए थे जब तक इतिहास अन्तिम दिनों में अपनी पराकाष्ठा अर्थात् शिरो-बिन्दु में नहीं पहुँच जाता – जिसे वह इब्रानियों 9:10 में "नई व्यवस्था का समय" कह कर पुकारता है। तब, इब्रानियों 9:11 में वह जोड़ता है कि:

मसीह आनेवाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया (इब्रानियों 9:11)।

यह कथन जोर देता है कि वे जिनका मसीह में विश्वास है पाप से स्वतंत्र उसके सिद्ध याजकीय प्रायश्चित के द्वारा हो गए हैं और अब वे स्वर्ग में अनुग्रह के सिंहासन के निकट मुक्त रूप से आ सकते हैं।

विरोधाभासों में से एक जिसे इब्रानियों के पत्र का लेखक पाप के लिए यीशु के बलिदान के लिए और पुराने नियम के बलिदान प्रणाली के मध्य में निर्मित करता है वह यह है कि पुराने नियम की बलिदान प्रणाली में याजक का कार्य कभी भी पूरी तरह से नहीं किया गया था। याजक को पाप के बलिदानों की निरन्तर पुनरावृत्ति करते रहना पड़ता था। और जिस बात को लेखक स्पष्ट करता है वह यह है कि, इस कार्य ने जो कुछ पाप से निपटारा करने के लिए आवश्यक था उसे कभी भी पूरा नहीं किया। सच्चाई तो यह है कि, यीशु ऐसा महान् महायाजक है, जिसने एक ही बार स्वयं को पाप के लिए बलिदान के रूप में दे दिया, पिता के दाहिने हाथ जा विराजमान हुआ, जबकि पुराने नियम के याजक अपने पैरों पर खड़े रहते हुए स्मरण दिलाते हैं कि उनका कार्य अभी तक पूरा नहीं हुआ है। परन्तु यीशु जा कर बैठ गया, और इब्रानियों का लेखक इसकी व्याख्या ऐसा करता है कि इससे उसका कार्य पूरा हो गया, पाप के साथ पूरी तरह से निपटारा कर दिया गया, यह कार्य समाप्त हो गया है।

- डा. कॉन्स्टेंन्टाईन कैम्पबेल

लेखक यह भी विवरण देता है कि क्यों यीशु का बलिदान आवश्यक था। वह इसके लिए इच्छा का उदाहरण उपयोग करता है। सामान्य इच्छायें किसी की मृत्यु के ऊपर आरम्भ होती हैं। मूसा की वाचा मृत्यु और लहू के साथ आरम्भ हुई थी। इसलिए, लेखक यह तर्क देता है कि नई वाचा को भी मृत्यु और लहू के साथ – परमेश्वर के स्वर्गीय स्थान में मसीह के लहू के साथ मन्दिर के आन्तरिक भाग में आरम्भ होना चाहिए। परन्तु इस घटना में, "इच्छा" का उत्तराधिकार क्षमा है। इसलिए, किसी भी क्षमा को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब तक लोग यीशु के बलिदान के लहू से शुद्ध नहीं होते हैं। इब्रानियों 9:26 में लेखक इसे इस तरीके से लिखता है:

अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे (इब्रानियों 9:26)।

यीशु ने पाप के साथ एक ही बार में निपटारा कर दिया क्योंकि उसका लहू मनुष्य-के-बनाए हुए मन्दिर में नहीं छिड़का गया था। उसने स्वर्ग में स्वयं के बलिदान के द्वारा प्रवेश किया। बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर ने यिर्मयाह 31:34 में प्रतिज्ञा की थी:

मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:34)।

यीशु एक छुड़ौती के रूप में उसके लोगों के लिए उन्हें न्याय से स्वतंत्र करने के लिए मर गया। लेखक इस खण्ड का अन्त यह कहते हुए करता है कि मसीह पुन: वापस आएगा, परन्तु अब पाप को फिर से उठाने के लिए नहीं। जब वह वापस आएगा, यीशु उद्धार की पूर्णता को उनके लिए लाएगा जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

इब्रानियों 10:1-18 निरन्तर मूसा की तुलना और इसका विरोधाभास नई वाचा के साथ करती रहती है। इस समय लेखक यह पुष्टि करता है कि, नई वाचा में, यीशु का महायाजकीयपन पाप की अन्तिम क्षमा को ले आया है। वह पुनरावृति करता है कि प्रायश्चित के दिन के बलिदान पापों को वार्षिक रूप से स्मरण दिलाते थे, परन्तु वे पापों को ले नहीं जाते थे। और वह यह स्वीकार करता है कि पशुओं का बलिदान कभी भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता है। वह दाऊद को भजन संहिता 40 में उदधृत करता है जहाँ पर दाऊद ने स्वयं को परमेश्वर के लिए एक आदर्श स्वरूप भेंट चढ़ा दिया। और वह यह विवरण देता है कि यीशु ने इस आदर्श को स्वयं का बलिदान क्रूस के ऊपर चढ़ा कर पूरा किया है। जबकि लेवीय बलिदान पाप के लिए अन्तिम क्षमा को लेकर नहीं आए, यिर्मयाह की नई वाचा की प्रतिज्ञा की भविष्यद्वाणी यह है कि परमेश्वर इसके लोगों को सदैव के लिए उनके पापों से क्षमा करेगा। यीशु ने इसे पूरा कर दिया। इसलिए अब और अधिक पशुओं के बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

इब्रानियों 10:19-23 उपदेशों के चार खण्डों में से पहला है। पहला, लेखक ने उसके श्रोताओं को परमेश्वर के निकट आने के लिए और उसमें अपनी आशा को पकड़े रहने के लिए कहा है। वह व्याख्या देता है कि मसीह ने, लहू के द्वारा, महापवित्र स्थान में मार्ग को खोल दिया है। अब, आयत 23 में वह हमें ऐसे कहता है कि, वे "अपनी आशा के अंगीकार को [वे] दृढ़ता से थामे [रहें] " क्योंकि परमेश्वर सच्चा है।

अध्याय 19:24-31 में, लेखक ने उसके श्रोताओं को उपदेश दिया है कि वे एक दूसरे को "प्रेम और भले कार्यों के लिए" प्रोत्साहित करते रहें। उसने उल्लेख किया है कि वे एक दूसरे के साथ मिलना न छोड़ें, और इसके अतिरिक्त वे ऐसा और ज्यादा करें जब वे यह देखते हैं कि न्याय का दिन निकट आ रहा है। उसने फिर न्याय की गम्भीरता का विवरण दिया है जो कि उनके लिए प्रतीक्षा कर रहा है "जो परमेश्वर के पुत्र को पाँवों के तले रौंदते हैं," जो वाचा के लहू को अपवित्र समझते हैं, और जो अनुग्रह की आत्मा का अपमान करते हैं। जब वह यह ध्यान देता है कि, परमेश्वर उसके अपने लोगों का न्याय करेगा।

इब्रानियों 10:32-35 में, लेखक ने अपने श्रोताओं को बुलाहट दी है कि वे अपने अतीत को स्मरण करें और अपने हियाव को न छोड़ें। उसने उन्हें स्मरण दिलाया है कि उन्होंने स्वेच्छा से और आनन्द से भर कर अतीत में दुखों को उठाया है क्योंकि वे जानते थे कि इस संसार में उनके लिए उत्तम और स्थाई सम्पत्ति आने वाली है। यदि वे इस मार्ग में निरन्तर बने रहेंगे, तो उन्हें अत्यधिक पुरस्कार दिया जाएगा।

और इब्रानियों 10:36-39 में वह अपने श्रोताओं को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए विश्वास में दृढ़ होने के लिए उपदेश देता है। वह उन्हें यह स्मरण दिलाते हुए अपने उपदेश के लिए समर्थन करता है कि परमेश्वर अन्तिम न्याय और आशीषों को लाने वाला है। वह उन्हें चेतावनी देता है कि परमेश्वर उनसे सुख को छीन नहीं लेता जो विश्वास में जीवन यापन करने से पीछे हट जाते हैं। परन्तु इब्रानियों 10:39 में वह यह जोड़ता है कि:

पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करनेवाले हैं कि प्राणों को बचाएँ (इब्रानियों 10:39)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ठीक है, यह स्पष्ट है कि यहूदी विश्वासी थके हुए थे, वे निढाल हो चुके थे, वे सताए हुए थे – इसकी प्रासंगिकता पूरे संसार और कलीसिया के पूरे इतिहास के मसीहियों के लिए बहुत ज्यादा है – परन्तु वे थके हुए थे और उनका विश्वास डगमगा रहा था। और इसलिए, उन्होंने स्वयं ही अपने घरों को तोड़ दिया था। तथापि, वहाँ पर अभी तक शहादत् देने वाला सताव नहीं आया था, परन्तु ऐसा आभास होता है कि यह क्षितिज के ऊपर ही था, परिणामस्वरूप, उनके विश्वास के लिए वहाँ पर बहुत ही ज्यादा चुनौती थी, इसलिए अपनी आस्था को छोड़ने और पुराने मार्गों में वापस मुड़ जाने के लिए बहुत से कारण थे। और लेखक उनको लिखता है, उनको नई वाचा के प्रति सच्चे बने रहने के लिए प्रोत्साहित करता है जिस कारण वे यीशु में विश्वास करने लगे थे।

- डा. के. ऐरिक थियोनॉस

उपदेशों की इस श्रृंखला के बाद, 11:1-40 में, लेखक ने पत्र में अपने ध्यान को बचाने वाले विश्वास की ओर लगाया है। हमें पहिले ही उल्लेख किया है कि इब्रानियों के श्रोताओं ने अतीत में सताव को सहन किया था और और भी ज्यादा सामना करने की संभावना में थे। इसलिए, लेखक उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करता है जो परेशानियों के समय में पीछे की ओर नहीं हटता है।

वह फिर अपने कहने के अर्थ को पुराने नियम के इतिहास में से उन पात्रों की एक लम्बी सूची देते हुए जो विश्वास में विश्वासयोग्य बने रहे जब वे कठिनाइयों का सामना कर रहे थे, चित्रित करता है। अपने पूरे जीवनकाल में, इन विश्वासयोग्य लोगों ने वह प्राप्त नहीं किया जिसकी प्रतिज्ञा इनसे की गई थी क्योंकि परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा भविष्य के समय के लिए थी। परन्तु, जैसा कि इब्रानियों का लेखक विवरण देता है कि, वे मसीह के पुन: आगमन पर सिद्ध बनाए जाने के द्वारा लेखक और उसके श्रोताओं के साथ इस प्रतिज्ञा में साझी होंगे।

व्यावहारिक दृढ़ता 12:1–13:25

अन्तिम मुख्य भाग में, इब्रानियों 12:1–13:25 इब्रानियों की पुस्तक को व्यावहारिक दृढ़ता के विषय के ऊपर प्रकाश डालते हुए अन्त में ले आता है। यह भाग एक उपदेशों और उनके स्पष्टीकरण की एक लम्बी श्रृंखला से बना हुआ है। हमारे प्रयोजन की प्राप्ति के लिए, हम सामान्य तौर पर इन उपदेशों को सारांशित करेंगे।

जब इब्रानियों का लेखक पुस्तक के अन्त की ओर बढ़ रहा है, तो वह शीघ्रता से जीवन के विशेष क्षेत्रों के बारे में कई विभिन्न उपदेशों की सूची देता है। कई तरह से, यह इस पुस्तक का सबसे अधिक व्यावहारिक अंश है क्योंकि यह विशेषकर, उस तरह के व्यवहारों के ऊपर स्पर्श करता है जिसकी उसने आशा की है कि उसके श्रोता अनुसरण करेंगे। परन्तु लेखक ने उसके श्रोताओं को इन बड़े विशेषाधिकारों का एक दर्शन पाने के लिए प्रेरित और ऊर्जान्वित करने के लिए मौके का लाभ भी उठाया है जिसे उन्होंने मसीह का अनुसरण करते हुए आनन्द लिया है।

यह उपदेश पाँच सामान्य श्रेणियों में जिसके बाद में अन्त आता है, विभाजित किए जा सकते हैं। इब्रानियों 12:1-3 में, लेखक अपने श्रोताओं को विश्वास में दृढ़ बने रहने का उपदेश देता है, जैसा कि मानो यह एक दौड़ है। वे ऐसे पाप को दूर फेंकते हुए और मसीह के ऊपर ध्यान लगाने से कर सकते हैं, उसने भी ऐसा ही किया था।

इब्रानियों 12:4-13, श्रोताओं को उपदेश देता है कि वे कठिनाइयों का सामना परमेश्वर की ओर से पिता के अनुशासन के रूप में करें। लेखक अपने इस दृष्टिकोण को नीतिवचन 3:11,13 के संदर्भ को उदधृत करने से समर्थित करता है। वह विवरण देता है कि परमेश्वर का अनुशासन "धार्मिकता और शान्ति की कटनी को उत्पन्न" करता है। इसी तरह से, वह उन्हें स्वयं को मजबूत करने और सताव के द्वारा अक्षम न होने के लिए उत्साहित करता है।

इब्रानियों 12:14-17 में, लेखक एक बार फिर से उसके श्रोताओं को एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए उपदेश देता है। वह उनसे बिनती करता है कि वे शान्ति और पवित्रता में जीवन यापन करें। उन्हें सुनिश्चित करना था कि वे किसी तरह की कमजोरी और व्यभिचार की अनैतिकता में न गिर जाएँ। वह चित्रित करता है कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कैसे इस बात को एसाव के उदाहरण की ओर संकेत करना कितना महत्वपूर्ण है जो अपने उत्तराधिकार के अधिकार को छोड़ने के लिए कुछ नहीं कर सका।

इब्रानियों 12:18-19 में, लेखक उसके श्रोताओं को मसीह में उनकी आशीषों के लिए धन्यवादी होने के लिए उपदेश देता है। अपने श्रोताओं की आत्मा को उत्साहित करने के लिए और दृढ़ता में बने रहने के लिए प्रेरित करने के लिए, वह अथाह विशेषाधिकारों और आशीषों का विवरण देता है जिन्हें उन्होंने प्राप्त किया था। इब्रानियों 12:22-24 को सुनिए:

पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है (इब्रानियों 12:22-24)।

इब्रानियों 12:22 और उसके बाद, इब्रानियों का लेखक कहता है कि, "हम सिय्योन के पास आ पहुँचे हैं।" अब, आपको इसे पिछले अध्याय के साथ सम्बन्धित करते हुए लेना चाहिए क्योंकि हमें अध्याय 11 में जिन्हें "विश्वास के योद्धा" कहते हैं, वे जिन्हें पुराने नियम के सन्त कहा जाता है, सारे के सारे विश्वास में प्रतिज्ञा को प्राप्त किए बिना ही मर गए। परन्तु फिर, अध्याय 12 के आरम्भ में, हमें कहा गया है कि मसीह प्रवेश करता है, क्योंकि मसीह ने दौड़ को पूरा कर लिया; वह जयवन्त हुआ। और इस तरह से, आयत 22 और उसके बाद की आयत क्या कह रही हैं वह यह है कि हम ऐसे स्थान पर आ पहुँचे हैं जहाँ पर यहाँ तक कि पुराने नियम के सन्तों ने भी उनके पार्थिव जीवनकाल में किसी तरह का कोई आनन्द प्राप्त नहीं किया था। और इब्रानियों का लेखक आगे कहता चला जाता है कि, "कि हम सिय्योन पहाड़ पर, पहिलौठों की कलीसिया के पास, स्वर्गदूतों की मण्डली, स्वर्ग में सामान्य सभा में आ पहुँचे हैं," और वह यहाँ पर क्या विवरण दे रहा है कि यहाँ पर परमेश्वर का सिंहासन है, स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर की उपस्थिति है। और चौंका देने वाले उपयोगों में से एक यह है कि सिय्योन पहाड़ और यरूशलेम में सब कुछ जो पुराने नियम की ओर संकेत करता है वह उन लोगों के लिए वास्तविकता बन गया है जो मसीह में हैं ताकि वे एक भजन जैसे भजन संहिता 48 की ओर ठीक तरह से देख सकें, "परमेश्वर महान् और हमारे परमेश्वर के नगर में अति स्तुति के योग्य है," और इसके बारे में सोचें कि इसका क्या अर्थ है जब हम इस पृथ्वी पर मसीह की मण्डली में इकट्ठे होते हैं – मानो कि हम स्वर्ग में सिय्योन पहाड़ पर खड़े हैं, न कि किसी सांसारिक प्रतिकृति, अपितु सच्चा स्वर्गीय सिय्योन, वह जो नए स्वर्ग और पृथ्वी में प्रगट होगा जब यरूशलेम नीचे उतरेगा, यह कि हम वहाँ स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति में मसीह में और मसीह के द्वारा जो जयवन्त हुआ है, खड़े होंगे। और इसमें उल्लेखनीय भिन्नता होगी कि कैसे हम इस संसार की दृश्य कलीसिया को देखते हैं।

- डा. माईकल जे. गोलोडो

इब्रानियों 13:1-19 में, लेखक उसके श्रोताओं को संक्षेप में प्रतिदिन के जीवन में विश्वासयोग्य रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह एक दूसरे को प्रेम करने, बाहरी लोगों को और कैदियों को स्मरण करते हुए, विवाह को सम्मान देते हुए, सन्तुष्ट रहते हुए और अपने अगुवों का स्मरण करने का उल्लेख करता है। उसने उन्हें आश्चर्यजनक स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं का विरोध करने और अपने जीवनों में मसीह के दुखों को आलिंगन करने के लिए भी स्मरण दिलाया। उसने उनसे बिनती की कि वे स्तुति के बलिदानों को चढ़ाएँ, भले कार्य करें और एक दूसरे के साथ अपनी सम्पत्ति को साझा करें। फिर उसने इस खण्ड को उसके लिए और उसके साथियों के लिए प्रार्थना करने की बिनती करते हुए अन्त किया है।

अन्त में, इब्रानियों 13:20-25 में, लेखक ने अपनी पुस्तक को समाप्त किया है। आयत 20 और 21 में, उसने आशीष वचन दिए हैं, जो कि एक ऐसी प्रार्थना है कि परमेश्वर, जिसने यीशु को जिलाया, उनमें कार्य करे और महिमा को प्राप्त करे। फिर आयत 22 में, उसने अपने श्रोताओं को बुलाहट दी है कि, "इस उपदेश की बातों को सहन कर लो," या उन्हें लिखे हुए सन्देश को। और फिर उसने अपने पत्र को कई तरह से नमस्कारों को लिखते हुए समाप्त किया।

सारांश

इस अध्याय में, हमने इब्रानियों की पुस्तक की विषय-वस्तु और सरंचना को देखा है। हमने मसीह में अन्तिम दिनों के ऊपर आवर्ती विषय-वस्तु, और लेखक के दृष्टिकोण को पुराने नियम से समर्थित होते हुए और दृढ़ बने रहने के लिए उसके कई उपदेशों के ऊपर ध्यान दिया है। हमने इस पुस्तक की आलंकारिक सरंचना की यह ध्यान देते हुए जाँच की है कि कैसे लेखक ने इसके आवृत्ति विषयों को इकट्ठा कर मसीही विश्वास के विरूद्ध आने वाली चुनौतियों को बुनते हुए सम्बोधित किया है जो कि स्थानीय यहूदी शिक्षाओं की ओर से आई थी।

इब्रानियों की पुस्तक मसीह के अनुयायियों के लिए बड़े खजाने का प्रस्ताव देती है। इसका धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण गहनता से उन सब में भेदन करता है जिसे मसीह ने हमारे लिए पूरा किया है। और ये मसीह का अनुसरण करने के लिए एक हृदय को कैसा होना चाहिए, को भी भेदता है। इब्रानियों की पुस्तक हमें पवित्रशास्त्र को हमारे ऊपर अधिकार होने के रूप में उसकी ओर मुड़ने और मसीह को उस सब की पूर्णता जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, को प्राप्त करने के लिए बुलाहट देती है। और यह हमें मसीह को धन्यवाद से भरे हुए हृदयों से मसीह की सेवा और प्रेम करने का उपदेश तब तक करने के लिए कहती है जब तक वह दिन नहीं आ जाता जब हम उस राज्य को प्राप्त करेंगे जिसे वह हमारे लिए तैयार कर रहा है, वही केवल ऐसा राज्य है जो कभी भी हिलने वाला नहीं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम